[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3680

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# चित्रकला में रंग (प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक के परिप्रेक्ष्य में)

सचिव गौतम (शोध छात्र)
चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय, काशी हिन्दू विश्विद्यालय, वाराणसी
Email: sachiv.1986@gmail.com

मानव जीवन में वर्ण (रंग) का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक वस्तु कोई न कोई रंग लिये हुये है। वस्तुओं के धरातल में रंग होने के कारण ही वह हमें दिखाई देती है। रंगों के प्रति मानव का आकर्षण कभी घटा नहीं है। इसीलिये आदिम गुफाचित्रों से लेकर आधुनिक मानव तक ने सौन्दर्य के विकास में रंगों का सहारा लिया है। रंगों का महत्व हमें मानव जीवन के इतिहास के हर अध्याय में देखने को मिलता है। वर्ण प्रभाव अर्थात् रंग प्रभाव के आधार पर चित्र को सौन्दर्य प्रधान बनाया जा सकता है। रंग हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है; इसके बिना प्रकृति उपस्थित किसी भी पदार्थ या जीव का अपना कोई वजूद नहीं है। रंगों के द्वारा ही हमें उसकी पहचान होती है। रंग का अपना एक अस्तित्व है जिसकी अपनी ही एक भाषा है और उस भाषा को एक कलाकार बहुत अच्छे से समझता है। तभी वह रंगों का प्रयोग उचित ढंग से चित्रकला में करता है।

कला में रंग का अपना ही एक अलग ही स्थान है। कला संस्कृत भाषा का शब्द है। इस शब्द के लिये फ्रेंच शब्द Art (आर्ट) और लैटिन में 'आर्स' है, जिसका अर्थ है बनाना या पैदा करना। कला एक प्रकार का शारीरिक व मानसिक कौशल है। कला शब्द का प्रयोग आज काव्य, संगीत, चित्र, वास्तु आदि ललित–कलाओं के लिये किया जाता है। समय–समय पर विद्वानों एवं कला–मर्मज्ञों ने कला या ललित –कला को कई ढंग से परिभाषित किया है। महान दार्शनिक प्लेटो के अनुसार– ''कला सत्य की अनुकृति है।'' वहीं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कला के लिये कहा है– ''कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।'' कला जीवन को 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' से समन्वित करती है। कला में ही मानव मन की संवेदनाये उभारने, प्रकृतियों को ढाने तथा चिंतन का कार्य होता है। आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण है, जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है। प्रकाश से किसी वस्तु को देखते हैं। प्रकाश से ही हमें रंगों का बोध होता है। कहा जाय तो रंग एक मानसिक अनुभूति है, जैसे–स्वाद या सुगंध। एक ही आकार की दो अलग–अलग वस्तुओं का अनुभव या पहचान रंगों के द्वारा ही होता है। हमारी दृष्टि रंगतों वाली वस्तुओं पर सबसे पहले जाती है। रंग दो प्रकार के होते हैं। ये लगभग हम सभी जानते हैं–

(1) प्राथमिक रंग (Primary Colour)
(2) द्वितीयक रंग (Secondary Colour)

प्राथमिक रंग वे रंग होते हैं जो प्रकृति में मूल रूप में पाये जाते हैं और वे बिना मिलावट के प्राप्त होते हैं। मुख्य रंग तीन हैं– लाल, पीला, नीला। द्वितीय रंग वे रंग होते हैं, जो दो प्राथमिक रंगों को मिलाकर बनाये जाते हैं। जैसे– नारंगी, बैंगनी, हरा, गुलाबी, भूरा आदि। द्वितीयक रंग प्राथमिक रंगों का मेल है। एक रंग को दूसरे रंग से मिलाने पर एक तीसरा रंग बनता है। रंगों को दूसरे के साथ मिलाकर अनेक रंग बनते हैं। वैज्ञानिक काला और सफेद को रंग नहीं मानते। चित्र विशेषज्ञों के अनुसार जब सभी रंग मिलते हैं तो प्रकाश के अभाव में काला रंग दिखाई देता है। वहीं गतिमान अवस्था में जब रंगों का मिश्रण प्रकाश की उपस्थिति में होता है तो वहाँ श्वेत रंग दिखाई पड़ता है। श्वेत और काला रंग समकालीन कला में कलाकार खुलकर प्रयोग कर रहे हैं।

चित्रकला में रंगों का प्रयोग बहुत ही सहज स्वभाव से करना पड़ता है। रंगों का सन्तुलन बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, चित्रकला का। रंग के हल्केपन तथा गहरेपन के प्रभाव के संतुलित बँटवारे से ही रंग का संतुलन होता है।

भारतीय चित्रकला का इतिहास बहुत ही पुराना है। जिसके साक्ष्य हमें कई जह मिलते हैं। प्रागैतिहासिक चित्रकला में भी हम कई प्रमाण मिलते हैं रंगों के प्रयोग के। आदि काल से ही मनुष्य ने अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिये। चित्रों का ही सहारा लिया। चित्रकला का विकास भी मनुष्य के विकास के साथ हुआ है। चित्रकला को उसके प्रारम्भिक कालक्रम को समझना बहुत ही मुश्किल है। प्रस्तरकालीन चित्रावशेष यूरोप, अफ्रीका, भारत, आस्ट्रेलिया आदि अनेक भू–भागों से प्राप्त हुये हैं। इनकी अंकन शैली व विषयवस्तु में साम्य देखकर आश्चर्य होता है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब एक ही व्यक्ति की कलाकृति हो। रंगों का प्रयोग कोई योजनाबद्ध नहीं किया गया है। आदिम चित्रों में गेरु, रामरज, काजल व खड़िया जैसे रंगों का सहज प्रयोग किया गया है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय कला व संस्कृति का एक समृद्धशाली रहा है। जिसका लगभग सात हजार वर्ष पुरानी प्रमाणिक परम्पर विद्यमान है, जिसका प्रमाण विभिन्न उपलब्ध साक्ष्यों से अब पूरी दुनिया के सम्मुख है। इतनी पुरानी और समृद्ध संस्कृति की गौरव देने में भारतीय कला और कलाकारों का बहुत योगदान रहा है। युगों–युगों से भारतीय कला आत्माभिव्यक्ति एवं रचनाधर्मिता की दृष्टि से अत्यन्त उच्च स्तर तक समृद्धशाली रही है, जिसे कालान्तर में कुछ विदेशी कला–तत्वों के समावेश के कारण परिवर्त तो हुये किन्तु भारतीय कला और कलाकारों भारतीय कला के दर्शन प्राचीन काल से आधुनिक काल तक अपनी दार्शनिक सोच को संजोकर उसे विभिन्न रूपों में विस्तारित किया है, जिससे वह समय परिवर्तन के साथ भले ही बदलते रहे हों और इनके कारण कला में हुये इन परिवर्तनों की वजह से ही समकालीन कला में विभिन्न बदलावों को देखा जा सकता है।

भारतीय कला के इतिहास में कलाकारों ने अपनी भूमिका निभाई है, चाहे वह आधुनिक कला हो प्राचीन या मध्यकालीन कला हो या प्रागैतिहासिक कालीन कला, सभी कालों में इन भारतीय कलाकारों ने अपने–अपने तरीके से भारतीय कला को पल्लवित और विकसित किया है। इसी के आधार पर कलाकारों ने अपनी रंग योजना को भी विस्तार दिया है। समकालीन कला में रंग योजना स्वभाविक न होकर अमूर्तन की ओर अधिक विकसित हो रही है। रंगों के अपने मायने बदलते जा रहे हैं। रंगों की भाषा चित्रों में और भी प्रखर रूप में विकसित हो रही है।

कला की उत्पत्ति जीवन का श्रृंगार करने की लालसा से हुयी। आदिम युग का शिल्पी जीवन के व्यवहार की अनुकृति कला में उतारता था, जिसके साथ ही जीवन को अपनी कला से प्रभावित करने की लालसा भी उसके मन में प्रबल रूप से विद्यमान थी। अपनी गुफाओं की दीवारों पर वह शिकार के चत्रि बनाता था, तथा उन चित्रों में उसकी आकांक्षाये व्यक्त होती थी। उसकी रंग योजना प्रकृति से प्रेरित थी। प्रकृति से प्राप्त मूल रंगों का प्रयोग किया। अधिकतर खड़िया या कोयले से रेखांकन करता था। गेरु, रामरज व अन्य माध्यमों से रंगों की कमी को पूरी करता था। आज कला को जिन शब्दों में परिभाषित किया जा रहा है, वह कुछ नया सा प्रतीत होता है, परन्तु कला इतिहास से प्रतीत होता है कि विभिन्न कालों की चित्रकला को प्रगति का ज्ञान विभिन्न शास्त्रों में वर्णित रचनाओं जैसे– वेद, पुराण, रामायण या महाभारत में प्राप्त कला प्रसंगों से प्राप्त होता है। प्राचीन काल की चित्र कला हमारे जीवन की अभिव्यक्ति बनी हुयी थी यही कलाये जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत तक हमारा मानव–जीवन की लीलायें चित्रकला से ओतप्रोत है। चित्रकला वस्तुतः जीवन की अभिव्यक्ति है और इस अभिव्यक्ति में रंग एक प्रमुख माध्यम है। इसी के माध्यम से कलाकार अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त रूप से चित्रका में प्रस्तुत करता है। रंगों के बिना समकालीन कला में अभिव्यक्ति की कल्पना अधूरी ही रहती है। रंग चित्रका का महत्वपूर्ण अंग है। हर युग में कलाकृतियों में रंगों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। फिर चाहे हम अजंता या ऐलोरा की बात करें या फिर लघुचित्रों (मिनिचेयर) का उदहारण ले, इन सभी में हमें रंगों की उपयोगिता नजर आती है। रंग चित्र का ही नहीं वरन् हमारे जीवन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। रंगों हरा ही चित्रों में रस की अनुभूति होती है। समकालीन कला रंग अभिव्यक्ति का एक प्रबल माध्यम है। जिसकी उपयोगिता को हम नकार नहीं सकते।

आज भारतीय कला जिस जगह पर खड़ी है वहाँ का निर्माण भारतीय कलाकारों द्वारा मजबूती से किया गया है, जिस पर खड़े होकर भारतीय कला का स्वरूप बहुत ही साफ है स्वच्छ दिखाई देता है। कलाकार अपना रास्ता स्वयं ही खो हो रही है और ऐसे माहौल में रंगों के प्रयोग करने की तकनीक पर भी काम हो रहा है। जिससे कलाकार और भी कुशल ढंग से रंगों के द्वारा चित्रण कर सके।

***संदर्भ ग्रन्थ सूची***

1. *र0वि0 साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, जयपुर–2010*
2. *ए0के0 अग्रवाल, कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन (नवीन संस्करण, 2002) मेरठ–2007*